कला

प्रस्तावना : --

मानव की सौंदर्य भावना और कला का अटूट संबंध है। अर्थात कला का उदय मानव की सौंदर्य भावना के कारण हुआ है। सौंदर्य भावना की तृप्ति के लिए और मानसिक विकास के लिए विभिन्न कलाओं का जन्म प्राचीन काल में हुआ और आज कला मनुष्य के जीवन का अभिनव अंग बन गई।

संस्कृत साहित्य में ज्ञान का विभाजन दो रूपों में किया जाता है --

1) विद्या
2) उपविद्या

विद्या के अंतर्गत काव्य को स्थान दिया जाता है। और उपविद्या के अंतर्गत विभिन्न कलाओं को स्थान दिया जाता है।

भूतहरि के मतानुसार "साहित्य संगीत और कला के ज्ञान से रहित मनुष्य साक्षात पशु ही है।" इससे कला का महत्व कितना है यह दृष्टिगोचर होता है।

परिभाषाएं

1) कला शब्द की व्युत्पत्ति : -- कला शब्द की रचना कल +अच +टाप धातु एवं प्रत्यय के संयोग से हुई है। कला शब्द का शाब्दिक अर्थ है 'किसी वस्तु का छोटा अंश'
2) डॉ. रामदत्त भारद्वाज : -- इनके मतानुसार कला शब्द की व्युत्पत्ति इस प्रकार है ---
उन्होंने हमारे सामने दो शब्द रखें -- 'कवि' और 'लास्य' इन दोनों के प्रथम अक्षरों से 'कला' शब्द का निर्माण हो जाता है। लास्य शब्द का कोषार्थ है 'नृत्य' अथवा 'उछल कूद'
काव्य में कवि के अव्यक्त व्यक्त भावों की अभिव्यक्ति होती है। उसके अव्यक्त भाव शब्दों के माध्यम से आनंद के कारण नृत्य करने लगते हैं। केवल कवि ही नहीं अन्य सभी कलाकार वास्तुकार, मूर्तिकार, चित्रकार भी अपने अव्यक्त भाव रचना के माध्यम से व्यक्त करते हैं।
3) दंडी : -- दंडी ने कला के व्युत्पत्ति इस प्रकार दी है -- कला = क + ला। 'क' का अर्थ है - 'कामदेव' अर्थात 'सौंदर्य' 'प्रसन्नता' 'आनंद' हर्ष।
'ला' क अर्थ है -'देना'
अर्थात "सौंदर्य, प्रसन्नता, आनंद देने वाली वस्तु कला है"।
4) आचार्य रामचंद्र शुक्ल : -- "एक ही अनुभूति को दूसरों तक पहुंचा देना कला है।"
5) मैथिलीशरण गुप्त : -- "अभिव्यक्ति की कुशल शक्ति ही कला है।"

विविध कलाएं और उनकी संख्या

भारतीय साहित्य में 64 कलाओं का उल्लेख मिलता है। उनके कुछ नाम उदाहरण के तौर पर इस प्रकार है गान, वाद्य, नृत्य, नाट्य, चित्र आदि। इस प्रकार कलाओं का विभाजन किया जाता है। कलाओं की संख्या के बारे में विद्वानों में मतभेद है। बौद्ध धर्म 86 कलाओं को मानता है। किंतु 64 कलाओं को ही अधिक प्रसिद्ध दी गई है।

कलाओं का वर्गीकरण : --

आधुनिक काल में कलाओं का विभाजन दो प्रकार से किया जाता है --

1 उपयोगी कला
2 ललित कला

1) उपयोगी कला : -- जीवन के लिए जिन कलाओं का उपयोग होता है उसे 'उपयोगी कला' कहा जाता है यह कला दैनंदिन जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक होती है। उनमें से कुछ कलाओंकों हम देखेंगे - जैसे

- भोजन निर्माण, वस्त्र निर्माण, आभूषण निर्माण, स्वर्णकारी इत्यादि। इन कलाओं के कारण जीवन में सुविधा होती है। इनके अभाव में जीवन कष्टमय हो जाता है। दुखमय हो जाता है। अतः जीवन में सुख प्राप्त करने के लिए उपयोगी कला आवश्यक है।

2) ललित कला **: --** जिस कला के कारण सौंदर्य की अनुभूति तथा आनंद की प्राप्ति होती है उसको हम 'ललित कला' कहते हैं। ललित कला में सौंदर्य होता है वह देखने के बाद हमारी आत्मा संतुष्ट हो जाती है। उसे आनंद मिलता है आत्मा का विकास होता है।
इस कला को प्राचीन काल में कहीं भी ललित कला के नाम से अभिहित नहीं किया है। लेकिन कालिदास ने अपने रघुवंश में 'ललित कला विधि' शब्द का प्रयोग किया है, लेकिन शायद उस शब्द का अर्थ नृत्य अथवा गीत के लिए प्रयुक्त किया होगा।

पाश्चात्य विद्वानों ने कलाओं का विभाजन करते हुए 5 प्रकारों में बांटा है वह निम्नानुसार है ---

1) वास्तु कला
2) मूर्ति कला
3) चित्र कला
4) संगीत कला
5) काव्य कला

इन 5 कलाओं के अतिरिक्त वर्सफील्ड ने और 3 कलाओं को स्वीकार किया है --

6) नाट्य कला
7) नृत्य कला
8) भाषण कला

लेकिन उपर्युक्त 5 कलाओं को ही अधिक मान्यता दी गई है --

1) वास्तु कला **: --** वास्तु कला को 'स्थापत्य कला' भी कहते हैं । इस कला के अंतर्गत भवन निर्माण, मंदिर, मस्जिद, बांध,पूल आदि का निर्माण का समावेश होता है। भारत की वास्तुकला का उत्कृष्ट उदाहरण 'ताजमहल' है जिसमें विश्व की अपूर्व कलाकृतियों के सात आश्चर्य में शीर्षस्थ स्थान पाया है। लाल किला, अक्षरधाम मंदिर, कुतुब मीनार, जामा मस्जिद भी वास्तुकला का अनुपम उदाहरण है। वास्तु कला का आधार इंट, पत्थर, सीमेंट लोहा, लकड़ी आदि स्थूल रूप में है। साधन के रूप में कन्नी, फावड़ा आदि है। वास्तु कला में लंबाई चौड़ाई और मोटाई यह तीन तत्व होते हैं। स्थूलता स्थापत्य कला की विशेषता है।

2) मूर्ति कला **: --** स्थापत्य कला की अपेक्षा मूर्ति कला अधिक उन्नत कला है। यह कला वास्तु कला / स्थापत्य कला की अपेक्षा अधिक सूक्ष्म है।अन्य कलाओं के समान भारतीय मूर्ति कला अत्यंत प्राचीन है। पाषाण काल में भी मानव अपनी पाषाण उपकरणों को कुशलतापूर्वक काटकर विशेष आकार देता था। वह मूर्ति कला की प्रारम्भिक अवस्था थी। परंतु भारत में मूर्ति कला अपने वास्तविक रूप में हड़प्पा सभ्यता के दौरान ही अस्तित्व में आई। भारतीय मूर्ति कला की विषय वस्तु हमेशा काल्पनिक मानव रूप होते थे जो लोगों को हिंदू, बौद्ध या जैन धर्म के सत्यों की शिक्षा देने के कम आते थे। मूर्ति कला, का आधार मिट्टी पत्थर, लकड़ी, धातु आदि है। इस के साधन रंग, हथोड़ा आदि है और इसके तत्व है लंबाई चौड़ाई और मोटाई। यह कला उत्कृष्ट मनोभावों को व्यक्त करती हैं। इसमें कलाकार के मनोभाव कल्पना के रंग से व्यक्त होते हैं।

3) चित्र कला **: --** वास्तु एवं मूर्ति कला की अपेक्षा चित्रकला अधिक उत्कृष्ट एवं सूक्ष्म कला है। मनुष्य स्वभाव से ही अनुकरण की प्रवृत्ति रखता है जैसा देखता है उसी प्रकार अपने को ढालने का प्रयत्न करता है यही उसकी अभिव्यंजना होती है। अपने रंगों से भरी तूलिका से चित्रकार लोगों की भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है तो दर्शक भी आत्मविभोर हो जाता है। प्राचीन वह मध्य काल के दौरान भारतीय चित्र कार्य मुख्य रूप से धार्मिक भावना से ओतप्रोत थी।

लेकिन आधुनिक काल में भारतीय चित्रकारी लोक - जीवन के विषय को उठाकर उन्हें मूर्त कर रही है। चित्र कला का आधार कागज, कागज और पेंसिल है। इसके साधन रंग कुंची, लेखनी, आदि है। इस कला के केवल 2 तत्व है लंबाई और चौड़ाई। वास्तु एवं मूर्ति की अपेक्षा चित्र कला मनोभावों को अधिक स्पष्ट करती है।

4) संगीत कला : -- उपर्युक्त 3 कलाओं की अपेक्षा संगीत कला अधिक उत्कृष्ट है। जब यह कला संगीत के रूप में उभरती है तो कलाकार गायन और वादन से स्वयं को ही नहीं श्रोताओं को भी अभिभूत कर देता है। मनुष्य की आत्मा विस्तृत हो उठती है। दीपक राग से दीपक जल उठता है और मल्हार राग से मेघ बरसना यह कला की साधना का ही चरमोत्कर्ष है। संगीत की साधना सुरों की साधना है। आत्मा से परमात्मा का मिलन है। अभिव्यक्ति है अनुभूति की।

भाट और चारण जब युद्ध स्थल में उमंग, जोश से कविता का गान करते थे तो वीर योद्धाओं का उत्साह दोगुना हो जाता था। संगीत केवल मानव मात्र में ही नहीं अपितु पशु पक्षियों एवं पेड़ पौधों में भी अमृत रस भर देता है। पशु पक्षी संगीत से प्रभावित होकर झूम उठते हैं। पेड़ पौधों में भी स्पंदन होता है। यही नहीं मानव के अनेक रोगों का उपचार भी संगीत की तरंगों से संभव है। कहा भी गया है ---

"संगीत है शक्ति ईश्वर की, हर सुर में बसे है राम।
रागी तो गाए रागिनी, रोगी को मिले आराम। "

संगीत कला का आधार वाद्य यंत्र है। इसके साधन स्वर और कान है । उपर्युक्त कलाओं की भांति इसके तत्व नहीं है। इस कला के द्वारा व्यक्त भाव अधिक सूक्ष्म और स्पष्ट होते हैं। संगीत कला साकार करने वाला अपनी कला से श्रोता को रुला भी सकता है और हंसा भी सकता है।

5) काव्य कला : -- काव्य एक बहुत ही व्यापक कला है। काव्य साहित्य की वह विधा है जिसमें मनोभावों को कलात्मक रूप से अभिव्यक्त किया जाता है। काव्य मनोभावों की रसात्मक शाब्दिक अभिव्यक्ति है। काव्य केवल कानों को सुखद नही होता, बल्कि अर्थ की मनोहरता से भी परिपूर्ण होता है। अतः निर्दोष, रीति और गुणों से पूर्ण, अलंकृत और मनोहर अर्थ से समन्वित वाक्य काव्य कहा जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल कहते हैं "कविता मनुष्य के हृदय को व्यक्तिगत संबंध के संकुचित मंडल से उठाकर सामान्य भाव भूमि पर ले जाती है, जहां जगत के नाना रूपों और व्यापारों के साथ उसके प्रकृत संबंध का सौंदर्य दिखाई पड़ताहै।" काव्य में 'सत्यम शिवम सुंदरम' की भावना निहित होती है जिसमें यह भाव होते हैं वह उत्तम काव्य माना जाता है।

काव्य का स्थान ललित कलाओं में सर्वश्रेष्ठ है काव्य कला का आधार प्रतिभा है जहां संगीत कला में केवल स्वरों का उपयोग होता है वहां काव्य कला में स्वर और व्यंजन दोनों ही प्रयुक्त होते हैं। इस के साधन कंठ और नेत्र हैं। संगीत विशेषज्ञ स्वरों के आरोह-अवरोह के द्वारा श्रोता को भाव विभोर कर सकता है लेकिन यह भावविभोरता की स्थिति कायम नहीं होती जबकि कवि व्यंजनों और स्वरों के प्रयोग तथा उनके अर्थ द्वारा चिरस्थाई प्रभाव डाल सकता है।

- काव्य कला : -- सर्वप्रथम व सर्वश्रेष्ठ कला

कलाओं में सर्वश्रेष्ठ कला काव्य कला है क्योंकि जिस कला में मूर्त आधार जितना कम होगा वह कला उतनी ही श्रेष्ठ होगी। इसी सिद्धांत के आधार पर काव्य कला को सर्वश्रेष्ठ कला माना जाता है। काव्य कला में मूर्त आधार का पूर्णता अभाव रहा है। अतः वह श्रेष्ठ कला है। सर्वाधिक मूर्तता वास्तु कला में होती है। इसलिए सबसे निम्न कोटि की मानी जाती है। ललित कलाओं में जैसे जैसे मूर्त आधार की मात्रा कम होती जाती है वैसे - वैसे

कला श्रेष्ठ होती है। , वास्तु मूर्ति, चित्र, संगीत और काव्य कलाओं के आधार उत्तरोत्तर सूक्ष्म और कम होते जाते हैं। अतः काव्य कला सर्वश्रेष्ठ कला है।

काव्य कला में मूर्त आधार की आवश्यकता नहीं रहती है। उसकी उत्पत्ति शब्द या वाक्य से होती है काव्य की रमणीयता शब्द की अपेक्षा अर्थ और सौंदर्य पर आधारित है। अर्थ की रमणीयता भावों पर निर्भर रहती है। भाव अमूर्त होते हैं अतः काव्य कला में मुर्त आधार का सर्वथा अभाव रहता है। भूत भविष्य और वर्तमान का चित्रण इसमें अन्य कलाओं की अपेक्षा अच्छी तरह होता है।

निष्कर्ष रूप से हम कह सकते हैं कि काव्य में स्थूल उपकरणों का अभाव रहता है तथा मानव जीवन के संपूर्ण भावों की अभिव्यक्ति इसमें सरलता से होती है।अतः काव्य कला सर्वश्रेष्ठ है।

संदर्भ :- काव्य प्रदीप - राम बिहारी शुक्ल